(E - 122) मेरे कब ह्वै वा दिनकी सुघरी

मेरे कब ह्वै वा दिनकी सुघरी।। मेरे।।टेक।।

तन बिन वसन अशन विन वनमें,
निवसों नासादृष्टि धरि।। मेरे०।।१।।

पुण्य पाप परसौं कब विरचों,
परचों निजनिधि चिरविसरी।
तज उपाधि सजि सहज समाधि,
सहों धाम हिम मेघझरी।। मेरे०।।२।।

कब थिरजाग धरों ऐसो मोहि,
उपल जान मृग खाज हरी।
ध्यान कमान तान अनुभव-शर,
छेदों किहीं दिन मोह अरी।। मेरे०।।३।।

कब तृनकंचन एक गनों अरु,
मनिजड़ितालय शैल दरी।
दौल सत गुरुचरन सैव जो,
पुरवो आश यहै हमरी।। मेरे०।।४।।